❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज 150 स्वर्णिम वर्ष
मानव सेवा के
1875 ~ 2025

वर्ष 48, अंक 29 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 मई, 2025 से रविवार 18 मई, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

Operation SINDOOR पहलगाम आतंकी हमले का भारतीय सेना ने लिया जबरदस्त बदला

आपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता पर भारतीय सेना और सरकार को हार्दिक बधाई

आपरेशन सिंदूर आतंक के खिलाफ भारत की नीति है, भारत की जवाबी कार्रवाई सिर्फ स्थगित है, पाकिस्तान के हर कदम को कसौटी पर मापेंगे, टेरर और टॉक, टेरर और ट्रेड, पानी और खून एक साथ नहीं बह सकते – नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

22 अप्रैल 2025 के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना ने 15 दिन इंतजार किया कि पाकिस्तान स्वयं अपने आतंकवादियों पर कठोर करवाई करे, पर जब ऐसा कुछ नहीं हुआ तो 6 मई (मंगलवार) की देर रात को भारत ने ऑपरेशन सिंदूर का आगाज किया, 25 मिनट तक चले इस प्रहार में भारतीय सेना ने पीओके और पाकिस्तान में 9 ठिकानों पर हमला करके 100 से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया, इसमें जैश और लश्कर के टॉप आतंकी ढेर हुए, इसके बाद मुनीर की सेना ने भारत पर आक्रमण करने का दुस्साहस किया और भारतीय सेना ने ऐसा जवाब दिया जो पाकिस्तान अगले सात जन्मों तक याद रखेगा, उसके सैन्य ठिकानों पर भारत ने हमला किया, अहम एयरबेस को तबाह कर दिया। भारत के इस एक्शन से पाकिस्तान कांप उठा, उसने सोचा भी नहीं था, ड्रोन और मिसाइल अटैक का ऐसा जवाब मिलेगा, सैन्य ठिकानों पर हमला करने के बाद भारत के पास एडवांटेज था, इसी वजह से वो सीजफायर के लिए सहमत भी हुआ, भारतीय सेना को पता है कि उसने जो सोचा था वो हासिल किया चुका है, अगली बार भारत पर हमला करने से पहले पाकिस्तान 10 बार सोचेगा।

ज्ञातव्य है कि आर्य समाज ने आतंकवादियों के विरुद्ध 25 अप्रैल को जन्तर-मन्तर पर और 27 अप्रैल को आर्यसमाजों के प्रांगण में रोष प्रदर्शन करते हुए मांग की थी कि आतंकियों और आतंक के पोषक पाकिस्तान पर कठोर कार्यवाही की जाए। आर्यसमाज उद्घोष किया था - भारत सरकार के हर कदम के साथ है आर्य समाज। अत: पहलगाम आतंकी हमले का जो भारतीय सेवा ने जबरदस्त बदला लिया है, उसके लिए देशवासियों, भारत सरकार एवं भारतीय सेना को आर्य समाज की से बधाई।

- शेष पृष्ठ 3 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की ईनामी प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 ईनाम
1 लाख रुपये
व विशेष उपहार

2 ईनाम
51000/-
व विशेष उपहार

3रा ईनाम : 31000/- एवं विशेष उपहार (3)
4था ईनाम : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
5वां : नकद 2100/- (100)
6ठा : नकद 1000/- (250)
7वां : नकद 500/- (250)

प्रविष्टि की अन्तिम तिथि 1/9/2025

1 एवं 2 ईनाम विजेता तथा प्रतियोगिता में सर्वाधिक सहभागी बनने वाले विद्यालय/संस्था को भी विशेष ईनाम

नियम व शर्तें - 1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

3. प्रश्नपत्र को भरकर 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001' के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

–शेष पृष्ठ 6 पर

आर्यसमाज द्वारा संचालित
सुशीलराज आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के अन्तर्गत

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
द्वारा
संघ लोक सेवा आयोग की

सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा

रजिस्ट्रेशन शुल्क 100 रुपए मात्र/-

प्रमुख सुविधाएं
शिक्षण | मार्गदर्शन | रहना | खाना

इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें।
वेबसाइट : www.pratibhavikas.org

आवेदन की अंतिम तिथि - 30 जून 2025

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
12 मई, 2025 से 18 मई, 2025

देववाणी-संस्कृत

प्रभु के रक्षण के निराले ढंग

वेद-स्वाध्याय

महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः। नास्य क्षीयन्त ऊतयः।।
–ऋ 6 । 45 ।3
ऋषिः–**बार्हस्पत्यः शंयुः**।। देवता–**इन्द्रः**।। छन्दः–**गायत्री**।।

शब्दार्थ– **अस्य**=इस परमेश्वर के **प्रणीतयः**= आगे ले- जाने के, उन्नत करने के मार्ग **महीः**= बड़े हैं **उत प्रशस्तयः पूर्वीः**=और इसकी प्रशंसाएँ सनातन हैं **अस्य ऊतयः न क्षीयन्ते** =इसकी रक्षाएँ कभी क्षीण नहीं होती है।

विनय- मैं क्या बतलाऊँ प्रभु किन-किन अद्‌भुत ढङ्गों से मनुष्य को उन्नत कर रहे हैं। जब मनुष्य रोता और पीटता रहता है, जब उसके अन्दर ऐसे युद्ध चल रहे होते हैं कि उसे विफलता-पर-विफलता ही मिलती जाती है, पीछे से पता लगता है कि उस समय में, उन्हीं दिनों में उसने अपनी उन्नति का बड़ा रास्ता तै कर लिया होता है। मनुष्य प्रभु की कल्याणमयी घटनाओं को नहीं समझ पाता कि उन घटनाओं से कभी-सुदूर भविष्य में उसका कल्याण कैसे सधेगा। प्रभु के उन्नत करनेवाले मार्ग इतने महान् और विशाल हैं कि अल्पदृष्टि मनुष्य उन्हें पूर्णता में कभी नहीं देख सकता, अतएव वह कल्याण की ओर जाता हुआ भी घबराया रहता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी प्रकृति-स्वभाव के अनुसार अपने-अपने निराले ढङ्ग से उन्नत व विकसित हो रहा है। जब मनुष्य अपने ही उन्नति-मार्ग को नहीं समझ पाता तो उसके लिए दूसरे मनुष्यों के विकास का दावा भरना कितना कठिन साहस है! उस अगम्य लीलावाले प्रभु की जिस 'प्रणीति' से जिस व्यक्ति ने उन्नति पायी होती है वह व्यक्ति उसी रूप में उस प्रभु के गीत गाता फिरता है। इस तरह अनादिकाल से मनुष्य नाना प्रकार से उसकी प्रशस्तियाँ गाते आ रहे हैं और गाते रहेंगे। मनुष्य उसकी स्तुतियों का कैसे पार पाएँ? भक्त पुरुष तो उस प्रभु की रक्षाओं का-रक्षा के प्रकारों का ही अन्त नहीं देखता। प्रभु की रक्षण-शक्ति कभी क्षीण नहीं होती। वहाँ से रक्षणों का एक ऐसा सनातन प्रवाह बह रहा है कि वह सब मनुष्य, पशु, पक्षी कीट-पतङ्गों की, सब स्थावर और अस्थावर जगत् की, एक ही समय में अकल्पनीय प्रकारों से रक्षा कर रहा है। मनुष्य अपने पिछले कुछ अनुभवों के आधार पर सोचता है कि ऐसा होने से मेरी रक्षा हो जाएगी, अतः वह वैसा ही होने की प्रभु से प्रार्थना करता है और वैसी की आशा करता है, परन्तु इस बार प्रभु एक बिल्कुल नये मार्ग से रक्षा करके मनुष्य को आश्चर्यकित कर देते हैं। एवं, नये-से -नये अकल्पनीय ढङ्गों से मनुष्य को प्रभु का रक्षण मिलता जाता है, तब पता लगता है कि प्रभु संसार का सब प्रकार के कल्याण ही कर रहे हैं। हम मानें या न मानें, पर वे तो हमें मारते हुए भी हमारी रक्षा कर रहे हैं। अहो, देखों उस प्रभु की उन्नति-मार्ग महान् हैं, उसकी रक्षा के प्रकार अनन्त हैं, जाननेवाला सब संसार उसकी स्तुतियाँ-ही-स्तुतियाँ गाता है।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

OPERATION SINDOOR

सीमित, सटीक और सफल रही – भारतीय सेना की पाकिस्तान पर कार्रवाई

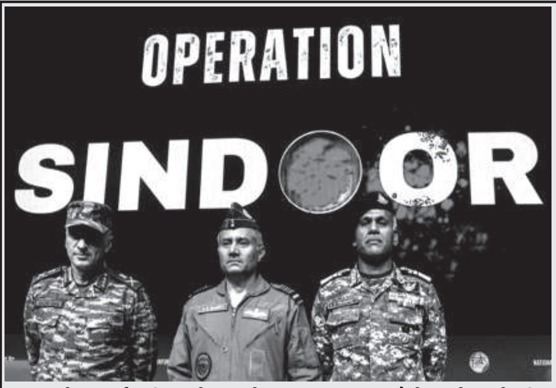

भारत ने पाकिस्तान के कहीं ज्यादा वायुसैनिक अड्डों और आतंकी ठिकानों पर सफल हमला किया, हालांकि, नुकसान कितना पहुंचाया यह अस्पष्ट है। क्योंकि पाकिस्तान की मीडिया में ऐसा कुछ भी कवरेज नहीं किया गया। हां, वहां के सोशल मीडिया से अनेकों ऐसी वीडियो सामने आईं, जिसमें रनवे पर तालाब जैसे गड्ढे बने दिखे। पाकिस्तान ने ऐसे कम सैन्य ठिकानों पर ही हमला किया, या ऐसे हमले करने में वह हमारे एयर डिफेंस सिस्टम के आगे बेबस रहा। कल की प्रेस कांफ्रेंस में एयर मार्शल ए.के. भारती ने जिन ठिकानों पर 6 और 7 मई की मध्यरात्रि को भारत ने हमले किए थे, उन जगहों के पहले की और बाद की तस्वीरें दिखाई और समझाया कि सेना ने कैसे सेना से जुड़े ठिकानों (एयर डिफेंस सिस्टम, रडार और अन्य उपकरणों को निशाना बनाया) और आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया।

पहलगाम हमले के बाद प्रधानमंत्री ने बिहार की चुनावी रैली में कहा था कि हम पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिला देंगे, और हुआ भी। ऑपरेशन सिंदूर शुरू हुआ, जिसमें जैश-ए-मोहम्मद के सरगना मसूद अजहर की पत्नी, बहन, बच्चे और 4 करीबियों समेत 14 लोग मिट्टी में मिला दिए गए। मसूद का ठिकाना इंटरनेशनल बॉर्डर से 100 किमी. अंदर पाकिस्तान के बहावलपुर में था। इसके अलावा भी भारत की ओर से अलग-अलग आतंकी ठिकानों पर हुए मिसाइल हमले में 100 आतंकी मारे गए। आर्मी की कार्रवाई में उनके 40 के करीब पाकिस्तानी सैनिक और अफसर भी मारने का दावा किया गया है।

यानि संदेश साफ था कि भारतीय 'ऑपरेशन' का उद्देश्य पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी गिरोहों में खौफ पैदा करना था ताकि वे भविष्य में हमले करने से बाज आएं। यह इस सीधी-सी बात पर निर्भर नहीं है कि क्या नुकसान हुआ और दूसरे पक्ष को किसने सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया। असली बात यह है कि कितना मनोवैज्ञानिक प्रभाव पैदा किया गया। खौफ पैदा करना और सजा देना, दोनों इस बात पर निर्भर करता है कि जिन पर हम प्रभाव डालने की कोशिश कर रहे हैं, उन पर कितना प्रभाव पड़ा है।

जाहिर है, इस लड़ाई से हुए नुकसानों की गिनती करेंगे तो यही निकलेगा कि भारत पाकिस्तान पर भारी पड़ा। भारत ने पाकिस्तान के कहीं ज्यादा वायुसैनिक अड्डों पर सफल हमला किया, हालांकि, नुकसान कितना पहुंचाया यह अस्पष्ट है। क्योंकि पाकिस्तान की मीडिया में ऐसा कुछ भी कवरेज नहीं किया गया। हां, वहां के सोशल मीडिया से अनेकों ऐसी वीडियो सामने आईं, जिसमें रनवे पर तालाब जैसे गड्ढे बने दिखे। पाकिस्तान ने ऐसे कम सैन्य ठिकानों पर ही हमला किया, या ऐसे हमले करने में वह हमारे एयर डिफेंस सिस्टम के आगे बेबस रहा। कल की प्रेस कांफ्रेंस में एयर मार्शल ए.के. भारती ने जिन ठिकानों पर छह और सात मई की मध्यरात्रि को भारत ने हमले किए थे, उन जगहों के पहले की और बाद की तस्वीरें दिखाई और समझाया कि सेना ने कैसे सेना से जुड़े ठिकानों (एयर डिफेंस सिस्टम, रडार और अन्य उपकरणों को निशाना बनाया) और आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान सेना के अधिकारियों ने बार-बार कहा कि सेना की "कार्रवाई सीमित, नपी-तुली और सटीक रही है", हालांकि उन्होंने ये भी कहा कि "अगर देश के लिए खतरा पैदा होगा तो उसका जवाब दिया जाएगा।"

दूसरा सवाल बना कि किसने किसके कितने लड़ाकू विमानों को मार गिराया। पाकिस्तान ने दावा किया कि उसने फ्रांस से खरीदे भारत के राफेल विमान को मार गिराया, जिसका जवाब देते हुए उन्होंने हां किया ना मना किया। ये कहा कि युद्ध में नुकसान होना युद्ध का हिस्सा है, हमने अपने उद्देश्य हासिल कर लिए हैं।

इसके अलावा भारत ने पाकिस्तान के परमाणु हथियारों से लैस कई हवाई ठिकानों पर हमला करके एक अहम सफलता हासिल की, जिनमें सरगोधा का अड्डा और इस्लामाबाद के बाहर स्थित वायुसैनिक अड्डा भी शामिल है। 1998 के बाद पाकिस्तान बार-बार परमाणु बम की धमकी देता रहा है, लेकिन इस बार भारत की सेना ने पाकिस्तान के वायुसैनिक अड्डों पर जिस तरह हमले किए, उससे साफ संकेत है कि भारत इन धमकियों से नहीं डरता। लेकिन एक सवाल सभी देशवासियों के मन में जरूर है कि भारत ने अमेरिका की ओर से संघर्षविराम को तुरंत स्वीकार क्यों कर लिया। दूसरा ये भी कि इस युद्ध में अमेरिका भारत की तरफ था या पाकिस्तान की।

दरअसल, इस जंग के शुरू होते ही अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने फॉक्स न्यूज के साथ एक इंटरव्यू में कहा था कि भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के मामले से अमेरिका दूरी बनाकर रखेगा और कूटनीतिक रास्ते अपनाएगा। हम मूल रूप से युद्ध में शामिल नहीं होने जा रहे हैं। यह हमारा काम नहीं है। यानी जेडी वेंस की बात का अर्थ निकाले तो ये कह सकते हैं कि पाकिस्तान के खिलाफ, भारत जो कदम उठा रहा है, उसमें वे बीच में नहीं आना चाहते और भारत को रोकना भी नहीं चाहते।

अमेरिका के चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप और जेडी वेंस का एक मुख्य मुद्दा यह था कि अमेरिका को बाहर के संघर्षों में शामिल नहीं होना चाहिए। यह सोच शायद भारत और पाकिस्तान के संघर्ष पर भी लागू होती है, यानी अगर दोनों देश आपस में लड़ रहे हैं तो अमेरिका को इससे कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए।

हां, पाकिस्तान के विश्लेषक ये बात जरूर मान रहे हैं कि अमेरिका ने तत्काल सीजफायर करने के लिए पाकिस्तान को रिश्वत दे दी है। क्योंकि जैसे ही पाकिस्तान को एक अरब डॉलर का आईएमएफ लोन दिया गया है, उसके चंद घंटों के बाद ही सीजफायर का ऐलान हुआ है। ट्रंप के पास यह मौका था कि अगर पाकिस्तान उनकी बात से इंकार करता तो फिर शायद उसे लोन नहीं मिलता। लेकिन भारत के साथ कैसे मैनेज किया, यह अभी साफ नहीं हुआ है, इस बात को लेकर ही सवाल उठ रहे हैं।

हां, इस छोटी चली जंग में वैसे तो हर एक देश ने मुख्य रूप से दूरी बनाकर रखी, लेकिन दो देश ऐसे थे जो साफ-साफ भारत-पाकिस्तान के साथ खड़े नजर आए।

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस बीच सीजफायर को लेकर भारत में और भारत के बाहर अलग-अलग तरह की बातें चलने लगी थी, कुछ लोग इसे उचित और कुछ अनुचित मान रहे थे। 12 मई सोमवार को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने शाम को 8 बजे देश को संबोधित करते हुए भारतीय सेनाओं को महान पराक्रम और शौर्य पूर्ण सफलता के लिए सैल्यूट किया। आपने देश को बताया कि भारत की तीनों सेनाएं, हमारी एयरफोर्स, हमारी आर्मी और हमारी नेवी, हमारी बॉर्डर सेक्योरिटी फोर्स- ठैथ, भारत के अर्धसैनिक बल, लगातार अलर्ट पर हैं। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के बाद, अब ऑपरेशन सिंदूर आतंक के खिलाफ भारत की नीति है। ऑपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में एक न लकीर खींच दी है, एक नया पैमाना, न्यू नॉर्मल तय कर दिया है।

पहला- भारत पर आतंकी हमला हुआ तो मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर जवाब देकर रहेंगे। हर उस जगह जाकर कठोर कार्रवाई करेंगे, जहां से आतंक की जड़ें निकलती हैं। दूसरा- कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल भारत नहीं सहेगा। न्यूक्लियर ब्लैकमेल की आड़ में पनप रहे आतंकी ठिकानों पर भारत सटीक और निर्णायक प्रहार करेगा।

तीसरा- हम आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखेंगे। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, दुनिया ने पाकिस्तान का वो घिनौना सच फिर देखा है, जब मारे गए आतंकियों को विदाई देने, पाकिस्तानी सेना के बड़े-बड़े अफसर उमड़ पड़े। स्टेट स्पॉन्सर्ड टेररिज्म का ये बहुत बड़ा सबूत है। हम भारत और अपने नागरिकों को किसी भी खतरे से बचाने के लिए लगातार निर्णायक कदम उठाते रहेंगे।

युद्ध के मैदान पर हमने हर बार पाकिस्तान को धूल चटाई है और इस बार ऑपरेशन सिंदूर ने नया आयाम जोड़ा है। हमने रेगिस्तानों और पहाड़ों में अपनी क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया है। साथ ही, न्यूज वॉरफेयर में भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। इस ऑपरेशन के दौरान, हमारे मेड इन इंडिया हथियारों की प्रमाणिकता सिद्ध हुई । आज दुनिया देख रही है, 21वीं सदी के वॉरफेयर में मेड इन इंडिया डिफेंस इक्विपमेंट्स को, इसका समय आ चुका है।

हर प्रकार के आतंकवाद के खिलाफ हम सभी का एकजुट रहना, हमारी एकता, हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। निश्चित तौर पर ये युग युद्ध का नहीं है लेकिन ये युग आतंकवाद का भी नहीं है। टेररिज्म के खिलाफ जीरो टॉलरेंस, ये एक बेहतर दुनिया की गारंटी है।

पाकिस्तानी फौज, पाकिस्तान की सरकार, जिस तरह आतंकवाद को खाद-पानी दे रहे है, वो एक दिन पाकिस्तान को ही समाप्त कर देगा। पाकिस्तान को अगर बचना है तो उसे अपने टेरर इंफ्रास्ट्रक्चर का सफाया करना ही होगा। इसके अलावा शांति का कोई रास्ता नहीं है। भारत का मत एकदम स्पष्ट है, टेरर और टॉक, एक साथ नहीं हो सकते, टेरर और ट्रेड, एक साथ नहीं चल सकते और पानी और खून भी एक साथ नहीं बह सकता।

मैं आज विश्व समुदाय को भी कहूंगा, हमारी घोषित नीति रही है, अगर पाकिस्तान से बात होगी, तो टेररिज्म पर ही होगी। अगर पाकिस्तान से बात होगी तो पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर (POK) पर ही होगी।

आज बुद्ध पूर्णिमा है। भगवान बुद्ध ने हमें शांति का रास्ता दिखाया है। शांति का मार्ग भी शक्ति से होकर जाता है। मानवता, शांति और समृद्धि की तरफ बढ़े, हर भारतीय शांति से जी सके, विकसित भारत के सपने को पूरा कर सके, इसके लिए भारत का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है और आवश्यकता पड़ने पर इस शक्ति का इस्तेमाल भी जरूरी है और पिछले कुछ दिनों में, भारत ने यही किया है।

मैं एक बार फिर भारत की सेना और सशस्त्र बलों को सैल्यूट करता हूं। हम भारतवासी के हौसले, हर भारतवासी की एकजुटता का शपथ, संकल्प, मैं उसे नमन करता हूं।

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

जब अंधविश्वास से प्रचलित हुआ - जो गुरु कहे -वही ठीक

गतांक से आगे -

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् समाप्त होने से, चार अक्षर पढ़-लिख कर भी सम्मान पाने की इच्छा के कारण बहुत से अविद्वानों ने स्वयं को वेद का विद्वान् घोषित कर लिया, जिसने जो अर्थ कर दिया वेदों का वो ही अर्थ प्रचलित हो गया। वेदों के गलत अर्थ का मार्ग प्रशस्त होता गया। जो अर्थ अपने स्वार्थों की पूर्ति करने के लिए राजाओं और राजगुरुओं की मिलीभगत से करवाए गए थे। वे ही वेद ज्ञान कहलाने लगे। इस प्रकार मूल वेद ज्ञान समाप्ति की ओर चलने लगा।

आर्यावर्त की मजबूत चक्रवर्ती राज्य सत्ताओं के समाप्त होने से, विश्वभर में छोटे-छोटे राजाओं और राज्यों का उदय हुआ। जो किसी प्रकार से मजबूत शासक नहीं बन सके। जीवन के व्यावहारिक मापदण्ड कमजोर हुए। रामायण काल में भाई-भाई के लिए राज्य छोड़ रहा था। एक भाई-भाई की सेवा के लिए बिना किसी सजा के 14 वर्ष वन में बिता रहे हैं और महाभारत काल आते-आते दोनों भाई राज्य की सत्ता के लिए एक दूसरे के खून के प्यासे हो चुके हैं। फलस्वरूप सर्वनाश।

महाभारतकाल के कुछ पश्चात् ही वेदादि शास्त्रों के गलत अर्थों के अत्यधिक प्रचलित हो जाने के कारण संसार में कुछ अलग-अलग व्यक्तित्व पैदा हुए, उन्होंने वेद के प्रचलित उन अर्थों को गलत समझकर उसको वर्तमान मानव सभ्यता के लिए उचित न समझा और उन्होंने अपना अलग विचार प्रचलित करना आरम्भ कर दिया। 'सत्य ज्ञान' हमेशा एक ही होता है पर सत्य की परिधि से जब बाहर आ जाएं तो फिर असत्य कितने भी हो सकते हैं। यही हुआ, जब तक सत्य वेद ज्ञान था, एक था। जब वेद के अतिरिक्त ज्ञान प्रचारित हुआ तो एक के बाद एक अनेक होते चले गए। आहिस्ता-आहिस्ता अलग-अलग विचार पैदा होने लगे। जब मूल सत्य समाप्त हो गया या यूं कहें कि गलत अर्थों के चलते छिप गया तो जिसने जो समझा, जो माना उसे ही सत्य सिद्ध करने के लिए सारी शक्ति लगाई। तर्क का स्थान अंधविश्वास ने ले लिया ये प्रचलित कर दिया **''जो गुरु कह रहे हैं वही ठीक है।''** गुरुडम प्रथा शुरु हो गई, यानि भोली-भाली जनता ने उन्हीं के लिखे ग्रन्थों को **'वेदज्ञान'** समझकर मानना आरम्भ कर दिया। उन ग्रन्थों के लिखने वालों को ही महान् विद्वान् माना जाने लगा, उनको समाज में और राज्य के द्वारा भरपूर सम्मान मिलने लगा, विपुल धनराशि प्राप्त होने लगी। पुत्र मोह ने उनको प्रेरित या विवश कर दिया कि वे ब्राह्मण अपने अविद्वान् बालक को भी वो ही सम्मान और संसाधन दिलवा सकें, जो उन्हें प्राप्त है। अत: उसको बिना पूर्ण योग्यता प्राप्त किए ही ब्राह्मण वर्ण का घोषित किए जाने की व्यवस्था करने का प्रयत्न किया जाने लगा। उधर राजा का पुत्र मोह उसको मजबूर कर रहा था कि उसका पुत्र भी बिना योग्यता प्राप्त किए ही और बिना परीक्षा को उत्तीर्ण किए ही क्षत्रिय वर्ण का घोषित हो जाए, इसके लिए प्रयत्न किए जाने लगे। इन प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप जो शिक्षा और योग्यता का ताना-बाना हमें 1 अरब 96 करोड़ वर्षों से मजबूत बनाता आया था, उसमें अनेक छिद्र हो गए। धीरे-धीरे वर्ण के आबंटन का आधार अर्जित योग्यता पर निर्भर न होकर जन्म से होने लगा। **यही हमारे पतन की शुरुआत का मूल कारण था।** परिणाम स्वरूप 'ज्ञान' समाप्ति की ओर बढ़ने लगा। जब बिना योग्यता प्राप्त किए ही ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण घोषित किए जाने लगे तो फिर भला अध्ययन की मेहनत क्योंकर की जाती और इसी बिगड़ी हुई शिक्षा व्यवस्था को अपने अनुकूल बनाए रखने के लिए भी प्रयत्न किए जाने लगे कि वेदों के ज्ञान को कोई पढ़ न ले, कोई पढ़ लेगा तो वह सत्य न बता दे जबकि धन के और अन्य लोभ के चलते वेदादि शास्त्रों के गलत अर्थ करना सामान्य बात हो गई।

इसलिए पहले स्त्रियों के लिए वेद पढ़ना अधर्म घोषित किया गया। फिर शूद्र के लिए भी, फिर वैश्य के लिए भी और क्षत्रियों को भी वेद पढ़ना निषेध है, जैसी नाशवान व्यवस्थाएं दी जाने लगी। जिसका अन्तत: परिणाम ये हुआ कि वेद ज्ञान एक छोटे से वर्ग विशेष तक सीमित रह गए या कहें कि बपौती बनकर रह गए। उन्होंने जो कहा कि ऐसा **''वेद में लिखा''** है, सबको वो ही मानना मजबूरी हो गई। अगर वो भी ज्ञान अर्जन के आधार पर होता तो भी इतनी हानि न होती पर वो तो केवल जन्म के आधार पर ही विद्वान् थे। यानि ब्राह्मण के घर पैदा हुआ ब्राह्मण, क्षत्रिय के घर पैदा हुआ बिना शस्त्र विद्या जाने भी क्षत्रिय। व्यापारिक बुद्धि हुए बिना भी वैश्य का बेटा वैश्य कहलाने लगा। ये ही हमारी अवनति के सबसे बड़े कारणों में से एक महत्त्वपूर्ण कारण बन गए। इन सबसे अधिक जो सबसे बड़ी हानि समाज को हुई वो यह कि शूद्र परिवार में पैदा हुए बालक के योग्यता अर्जित करने के बाद भी उच्च वर्ण में जाने का मार्ग अवरुद्ध हो गया—बन्द हो गया। यानि वह वेद को जानने की योग्यता प्राप्त करने के पश्चात् भी शूद्र ही कहलाएगा, इसी व्यवस्था ने आगे चलकर ऊंच-नीच की व्यवस्था बनाने का काम किया, जिसका परिणाम हमारा समाज आज तक भुगत रहा है।

वेदों पर तो आस्था रही पर वेद के गलत अर्थों के कारण अन्याय, अत्याचार निरन्तर बढ़ता चला गया। आहिस्ता-आहिस्ता जब वेद विद्या सीमित कर दी गई तो अशिक्षा बढ़ने लगी। परिणामस्वरूप नए-नए अवैदिक मान्यताओं के मतों के जन्म का मार्ग खुला।

- क्रमश:

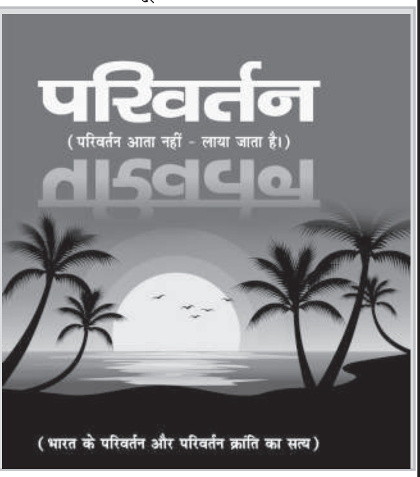

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

12 मई, 2025
से
18 मई, 2025

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के तत्त्वावधान में

दो दिवसीय राज्यस्तरीय आर्य महासम्मेलन सोलन (हिमाचल प्रदेश) में सम्पन्न

नवजागरण के सूर्य थे 19वीं सदी महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती- अनुराग ठाकुर, पूर्व केंद्रीय मंत्री

सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु आर्य सभा के साथ मिलकर कार्य करें क्षेत्रीय धर्मप्रेमी संगठन -प्रबोधचन्द्र सूद, प्रधान

मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित संगठन का नाम है, आर्य समाज - विनय आर्य, महामन्त्री

विश्व कल्याण के लिए आवश्यक है आर्य समाज की विचारधारा को अपनाना - आचार्य योगेश भारद्वाज

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की अमर वाटिका आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष संपूर्ण आर्य जगत के लिए एक अत्यंत प्रेरणा का अवसर बनकर आया है। जिसमें संपूर्ण आर्य जगत उमंग, उत्साह और उल्लास से भरपूर है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वां स्थापना वर्ष के आयोजनों की श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्रदेश द्वारा दो दिवसीय राज्य स्तरीय आर्य महासम्मेलन कला केन्द्र ऑडिटोरियम राजगढ रोड़ सोलन (हि.प्र.) में हर्षोल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। प्रथम दिन हिमाचल राज्य की आर्य समाजों, दिल्ली एवं अन्य राज्यों से पधारे अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित थे। सर्वप्रथम आर्य संन्यासी विदेह योगी जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें सभी यजमानों ने आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की। श्री दिनेश पथिक जी ने मधुर भजनों के माध्यम से महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की महिमा का बखान किया। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, चेयरमैन जे.बी.एम.ग्रुप एवं अध्यक्ष ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ने अपना शुभकामना सन्देश भेजा, जिसे पढ़कर सुनाया गया। इसके साथ ही डॉ. सुकामा आर्या, सिद्धार्थ विद्यार्थी एवं डॉ. शिव भारद्वाज के भी उद्बोधन हुए। बहुत ही सुंदर और प्रेरक आयोजनों की श्रृंखला में

- जारी पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
12 मई, 2025 से 18 मई, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

आर्यसमाजों में निरन्तर गतिशील हैं जन महासम्पर्क अभियान को लेकर बैठकें

प्रत्येक अधिकारी, कार्यकर्त्ता एंव सदस्य को अधिकाधिक नए लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य

आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष को लेकर चहुं ओर अत्यन्त उत्साह का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत के कोने कोने में और विदेशों में पिछले लम्बे समय से यज्ञ, योग, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण का एक प्रवाह चल रहा है। बड़े-बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन और प्रचार-प्रसार तथा विस्तार के विविध कीर्ति स्तंभ स्थापित हो रहे हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं के अनुरूप आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यताओं और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के विश्व स्तर पर अभियान चलाए जा रहे हैं।

इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जनसंपर्क अभियान को लेकर विभिन्न स्थानों पर चिंतन, मनन और संगोष्ठियों के आयोजन संपन्न हो रहे हैं। सभा अधिकारी, क्षेत्रीय समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उत्साह पूर्वक सहभागी बन रहे हैं, आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कृत संकल्पित आर्यजन स्वयं आगे आ रहे हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की मशाल से जगत को आलोकित कर रहे हैं। इस क्रम में आर्यसमाज रोहतास नगर शिवाजी पार्क, आर्य समाज कृष्णा नगर, आर्य समाज लक्ष्मी नगर, आर्य समाज श्रद्धापुरी और आर्यसमाज शाहबाद मोहम्मदपुर में जनसम्पर्क अभियान के लिए बैठकें सम्पन्न हुई तथा निरन्तर पूरी दिल्ली में बैठकों का दौर जारी है।

अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस (3 मई) के अवसर पर दिल्ली सहित विभिन्न स्थानों पर यज्ञों का का आयोजन

आर्य समाज के सिद्धांत मान्यता और परंपराओं में यज्ञ का सर्वोपरि स्थान है। विश्व के लगभग सभी आर्य समाज मंदिरों में, शिक्षण संस्थानों में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और सामाजिक पर्वो, राष्ट्रीय पर्वो, महापुरुषों की जयंतियों अथवा अन्य अवसरों पर यज्ञ अवश्य किए जाते हैं, इन यज्ञ में पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर सामूहिक बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन अपने आपमें अत्यंत मनोहारी और कल्याणकारी सिद्ध होते हैं।

वस्तुतः महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा के अनुसार जैसे आर्य समाज वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को अपना धर्म मानता है। वैसे ही यज्ञ के करने-कराने को भी अपना परम कर्तव्य मानता है, लेकिन मानव सेवा और परोपकार भी यज्ञ के ही रूप हैं। जैसे पौधों में पानी देना, मार्ग में गड्ढा हो तो उसमें मिट्टी भर देना, मानवजाति पर आश्रित पशु, पक्षियों कीट-पतंगों को भोजन, पानी देना, दीन दुखियों की सेवा सहायता करना, नेत्रहीन को सड़क पार करा देना यह भी यज्ञ के ही लघु रूप हैं। जो व्यक्ति, परिवार, संगठन ऐसे छोटे या बड़े स्तर पर परोपकार के प्रकल्प पर चलता है वह मानव कल्याण के यज्ञ में ही आहुति दे रहा है। आर्य समाज प्रारंभ से ही निरंतर मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण का अखंड यज्ञ चला रहा है। शिक्षा, चिकित्सा और सुरक्षा के रूप में अनगिनत सेवा कार्य आर्य समाज निरंतर करता आ रहा है, एक वाक्य में अगर कहा जाए तो आर्य समाज द्वारा की जा रही मानव सेवा अपने आप में एक नए विश्व के निर्माण में अहम भूमिका है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष को लेकर संपूर्ण भारत और विश्व में मानव सेवा नित्य नए आयाम स्थापित किया जा रहे हैं।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घर-घर यज्ञ, हर-हर यज्ञ की टीम ने तथा बनारस एवं न्यूजीलैंड में 3 मई 2025 को यज्ञ दिवस के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर यज्ञों के आयोजन किए गए।

- जारी पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

गतांक से आगे-

शौच गए और पानी लिया। आज्ञानुसार पलंग पर बिठाया गया। कुछ देर बैठकर फिर लेट गए। श्वास बड़े वेग से चलता था, और ऐसा प्रतीत होता था कि महर्षि जी श्वास को रोककर ईश्वर का ध्यान करते हैं। उस समय महर्षि जी से पूछा गया कि 'महाराज ! कहिये, अब आपकी तबीयत कैसी है?' कहने लगे कि 'अच्छी है, एक मास के पीछे आज का दिन आराम का है।' इस समय लाला जीवनदास जी ने, जो लाहौर से महर्षि जी को देखने अजमेर गए थे, स्वामी जी के अभिमुख होकर पूछा कि 'महाराज! इस समय कहां है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि ईश्वरेच्छा में।'

उस समय श्रीयुत के मुख पर किसी प्रकार का शोक या घबराहट प्रतीत नहीं होती थी। ऐसी वीरता के साथ दु:ख को सहन करते थे कि मुंह से कभी हाय या शोक नहीं निकला। इसी प्रकार महर्षि जी को बातचीत करते-करते पांच बज गए, और बड़ी सावधनता से रहे। इस समय हम लोगों ने श्रीयुत से पूछा कि 'कहिये, अब आपकी तबीयत का क्या हाल है?' तो कहने लगे कि 'अच्छा है, तेज और अन्धकार का भाव है।' इस बात को हम कुछ न समझ सके, क्योंकि महर्षि जी इस समय सरल बातचीत कर रहे थे। साढ़े पांच बजे का समय आया तो हम लोगों से महर्षि जी ने कहा, 'अब सब आर्यजनों को जो हमारे साथ और दूर-दूर देशों से आए हैं, बुला लो और हमारे पीछे खड़ा कर दो। कोई सन्मुख खड़ा न हो।' बस, आज्ञा पानी थी, वही किया गया।

जब सब लोग महर्षि जी के पास आ गए तब उन्होंने कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो और ऊपर की छत के दो छोटे द्वार भी खुलवा दिये। इस समय पण्डया विष्णुलाल मोहनलाल भी श्रीमान उदयपुराधीश की आज्ञानुसार आ गए। फिर महर्षि जी ने पूछा- कौन-सा पक्ष, क्या तिथि और क्या वार है? किसी ने उत्तर दिया कि कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की सन्धि अमावस मंगलवार है। यह सुनकर महर्षि जी ने कोठी की छत और दीवारों की ओर दृष्टि की, फिर पहले वेद-मन्त्र पढ़े, तत्पश्चात् संस्कृत में ईश्वर की कुछ उपासना की, फिर भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा-सा कथन कर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष सहित गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे। तत्पश्चात् हर्ष और प्रफुल्लित चित्त-सहित कुछ देर तक समाधियुक्त नयन खोल कहने लगे कि 'हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो! अहा! तूने अच्छी लीला की!' बस, इतना कह महर्षि जी महाराज ने, जो सीधे लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वास को रोककर एक बार ही निकाल दिया। *(आर्य धर्मेन्द्र जीवन)*

लेखक के शब्द सरल और अकृत्रिम हैं। ये शब्द बताते हैं कि दर्शकों के हृदयों पर उस तपस्वी की मृत्यु का गहरा असर हुआ था। कहते हैं कि लाहौर से पं गुरुदत्त विद्यार्थी भी लाला जीवनदास जी के साथ महर्षि के दर्शनों को गए हुए थे। पण्डित गुरुदत्त जी इससे पूर्व अर्ध-नास्तिक थे। विज्ञान के धक्के ने हृदय के ईश्वर-विश्वास को हिला दिया था। महर्षि की मृत्यु के दिव्य दृश्य को देखकर पण्डित जी के कोमल हृदय पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। एक आस्तिक किस शान्ति से मर सकता है यह देखकर गुरुदत्त का हृदय पिघल गया और जहां नास्तिकता के कारण शून्य हो रहा था वहां विश्वास और श्रद्धा का सुगन्धित पवन बहने लगा।

-क्रमश:

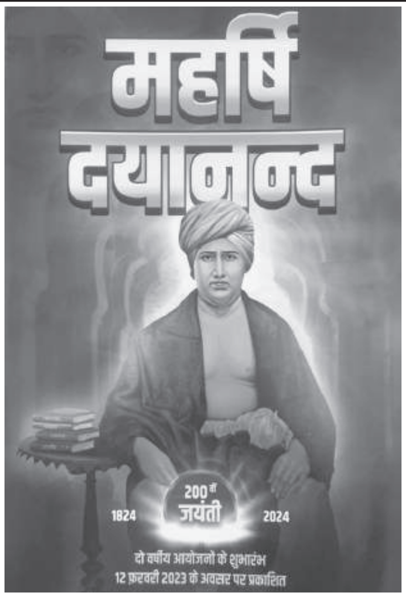

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

The patience of the sage even in such distress was astonishing. Seeing him, friends and enemies used to be astonished. So much trouble and not even a Sigh! He was patiently tolerating the disease and used to tell only the exact condition when asked. The body was full of ulcers, there was unbearable pain in speaking, it was becoming difficult to move. Even in such a condition, there was neither panic nor irritation on the face of the sage. He had the same serious face and the same calm posture. The people who saw Swami Dayanand in that condition, they felt that some divine power is definitely working in this man. It was imprinted in their hearts that the power of God was working with determination in the heart of this great man. The story of Swamiji's illness did not remain hidden for a long time. As soon as the news reached Ajmer, Arya men left for Jodhpur and were surprised to see Swamiji's condition. Due to the condition of disease, laxity of treatment and inconvenience of service, Aryan men urged the sage to go to Mount Abu. The sage accepted. On getting the information, the Maharaja was upset at first, but then on the insistence of Swami ji, with a detached heart, made arrangements to bid farewell respectfully. Being present himself at the time of farewell he made arrangements for the rest of the way. From Jodhpur, Swamiji went to Mount Abu in a doli, but there too he did not get any special comfort. Then Swamiji's disciples took him back to Ajmer. He suffered a lot physically in this journey, but he did not think it appropriate to hinder the disciples' strong desire to provide good treatment and self-service. In Ajmer, Swamiji was kept in a Kothi, and Dr. Laxmandasji's treatment started.

The time of death of the sage was drawing near. Treatment and service could not bring any change. We cannot describe the scene of the end better than the simple words which have been depicted by the pen of a spectator, that is why we are quoting the same-

After getting down from the train, Swamiji was made to lie down in a palanquin and was carefully brought to a the kothi, which had already been set aside for this purpose. It was three o'clock in the night at that time. It was the end of October. People used to feel cold, but only the word 'summer-summer' used to come out of Swamiji's mouth. All the doors of the Kothi were opened, even then Swamiji was not at peace. The treatment of Dr. Laxmandas ji started on the second day, but there was no difference in the condition of the patient. Once Swami ji said to his loved ones, 'Take me to Masuda!'

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

12वीं पास वंचित छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति
Pragati
भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों को आर्य समाज द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति के बारे में पूरी जानकारी (इंजीनियरिंग/मेडिकल/कानून/रक्षा आदि)
aryapragati.com
9311721172
आवेदन की अन्तिम तिथि 30 जून, 2025

प्रथम पृष्ठ का शेष

4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www. thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना/भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

पृष्ठ 4 का शेष

दो दिवसीय राज्यस्तरीय आर्य महासम्मेलन सोलन .....

दूसरे दिन वक्ताओं ने महत्वपूर्ण उद्बोधन देकर उपस्थित विशाल जनसमूह को आर्य समाज की विचारधारा और महर्षि दयानंद के मंतव्यों से अवगत कराते हुए आर्य समाज के उद्देश्य और सेवा कार्यों की चर्चा की तथा आगामी दिनों में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार की योजनाओं पर चिंतन और मंथन किया।

सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप अपना वर्चुअल उद्बोधन देते हुए केंद्रीय मंत्री श्री अनुराग ठाकुर जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती को नमन किया और आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्य समाज वह संगठन है जो **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** के उद्घोष को साकार करने के लिए सदैव प्रयास रत हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी 19वीं सदी के नवजागरण के सूर्य थे।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का अनुपम योगदान है, डीएवी जैसी संस्था आर्य समाज की देन है, जो शिक्षा के साथ संस्कारों का प्रचार-प्रसार आगे बढ़ा रही है और मैं स्वयं डीएवी स्कूल का विद्यार्थी रहा हूं, पूरे देश और दुनिया में डीएवी एक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान है जो महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सपनों को भारत सरकार साकार कर रही है। मैं स्वयं इस सम्मेलन में व्यक्तिगत रूप से आप सबके बीच आना चाहता था लेकिन विपरीत परिस्थितियों के कारण आ नही सका, इसका मुझे खेद है। मुझे विश्वास है कि आर्य समाज मानव सेवा के कार्यों को लगातार आगे बढ़ता रहेगा। इस अवसर हिमाचल सभा को इस आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित आचार्य योगेश भारद्वाज जी ने उपस्थित जनसमूह को जीवन का वास्तविक अर्थ बताते हुए कहा कि जीवन कोई प्रयोगशाला नहीं कि हम प्रयोग करते रहे और जीवन की सांस हो जाए जीवन जागृति का नाम है। एकेडमिक शिक्षा का अपना स्थान है लेकिन लाइफ एजुकेशन उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है,आज आधुनिक परिवेश में जो शिक्षा प्रदान की जा रही है उसमें लाइफ एजुकेशन का अभाव दिखाई देता है। आपने गुरुकुल या शिक्षा का उदाहरण देते हुए स्कूलीय शिक्षा के तुलनात्मक अध्ययन की बात की। आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यताओं और परंपराओं का जो आधार है वैदिक शिक्षा की बात कही। आपने पहलगाम में हुए हमले की निंदा करते हुए उदाहरण प्रस्तुत किया कि एयरफोर्स की तरफ से प्रेस कांफ्रेंस करने वाली सोफिया कुरैशी को अगर आज वर्दी पहनकर अपनी बात रखने का अधिकार प्राप्त हुआ, तो इसका श्रेय महर्षि देव दयानंद सरस्वती को जाता है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की सुधारवादी नीति के कारण ही यह संभव हो पाया है। आपने देश के लोकतंत्र और प्रजातंत्र, जन्म और जीवन के विषय में सारगर्भित संदेश देते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के राम राज्य का उदाहरण देते हुए कहा कि हमें अगर आगे बढ़ाना है तो राम राज्य स्थापित करना होगा और विश्व के कल्याण के लिए मानव मात्र को आर्य समाज के विचारधारा को अपनाना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपनी चिर परिचित शैली में आर्य जनों को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज की सही पहचान को समझना आज अत्यंत आवश्यक है, वस्तुत: आर्य समाज है क्या? आर्य समाज ही वह संगठन है, आर्य समाज ही वह संस्था है, आर्य समाज ही वह वैचारिक आंदोलन है जो पूर्णत: वैज्ञानिक, तार्किक एवं व्यवहारिक है और यही इसकी सर्वकालिक प्रासंगिकता का आधार है। आर्य समाज ने 150 वर्षो की ऐतिहासिक यात्रा में जो मानव सेवा, शिक्षा सेवा, महिला उत्थान, दलितों का उद्धार और राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में विविध योगदान सहित भारत की स्वतंत्रता में जो अभूतपूर्व कार्य किया है, उसी स्वर्णिम इतिहास का नाम है आर्य समाज। आपने अमेरिका से आए सत्यानंद स्टोक्स, जस्टिस मेहरचंद महाजन, लाला लाजपत राय और पंडित रुलिया राम जैसे महर्षि दयानंद के भक्तों के प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करके समस्त उपस्थित जन समूह को यह स्पष्ट रूप से बताया कि व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व को सुदशा देने वाली, महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित संस्था का नाम ही आर्य समाज है। विपरीत परिस्थितियों को वैदिक विचारधारा से सन्मार्ग प्रदान करने का कार्य करने वाला ही आर्य समाज है। आपने हिमाचल प्रदेश की वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों की ओर इशारा करते हुए कहा कि प्रदेश में बाहरी लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है, साथ ही लोभ और भ्रांति के कारण धर्मांतरण लगातार किया जा रहा है, प्रदेश की डेमोग्राफिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए आज एक नई चुनौती बनती जा रही है, अंधविश्वास, जातिवाद, छुआछूत और पाखंड जैसी सामाजिक बुराइयों को जड़ से उखाड़ना आर्य समाज का संकल्प है, आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है, इसलिए शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के माध्यम से हम आगे बढ़े। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के प्रधान श्री प्रबोध चंद्र सूद जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश कठिन भौगोलिक परिस्थितियों वाला राज्य है, जिसकी संस्कृति और समाज व्यवस्था अभी तक बाहरी आधुनिक विकृतियों से काफी हद तक बची रही है, किंतु अब आवश्यकता है कि इस सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए आर्य समाज और शिक्षण संस्थान एवं सनातन धर्म प्रेमी सब मिलकर कार्य करें, सामाजिक विसंगतियों, भेदभाव और जातिगत दीवार को समाप्त करके सामंजस्य बनाकर मानवता की सेवा के लिए आगे बढ़े। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के प्रथम प्रधान पंडित विद्याधर जी को मरणोपरांत सम्मानित किया गया, जो उनके सुपुत्र सुरेंद्र कुमार भारद्वाज जी ने ग्रहण किया। इस अवसर पर दयानन्द आदर्श विद्यालय सोलन, आर्य कन्या विद्यालय, शिमला के विद्यार्थियों ने अपनी प्रेरक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, मध्यप्रदेश, चण्डीगढ आदि से आर्यो ने इस आयोजन में शामिल होकर इसको भव्यता प्रदान की, जिनकी उपस्थिति लगभग 1500 रही। विकट परिस्थितियां होने के बावजूद उपस्थित जन समूह व गणमान्य अतिथियों का स्वागत सभा महामंत्री विपन महाजन द्वारा आभार प्रकट करके किया गया। सभी आर्यों का कार्यकर्ता रूप में आने के लिए व सभी सहयोग करने वाले आर्यसमाजों, विद्यालयों का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

- विपन महाजन, महामन्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

सीमित, सटीक और सफल .....

एक तुर्की का, जिसने भारत की कार्रवाई की निंदा की है और पाकिस्तान का समर्थन किया है। दूसरा इजराइल का, जिसने भारत को पूरी तरह समर्थन दिया है।

बाकी प्रमुख देश जैसे अमेरिका, रूस और चीन ने भी यही कहा है कि दोनों देशों को तनाव कम करने के लिए कूटनीतिक हल निकालना चाहिए, यानी डिप्लोमैटिक से जवाब थे।

जो भी हो, पाकिस्तान को अब यह सोचना पड़ेगा कि अब भारत पर किया गया कोई बड़ा आतंकवादी हमला एक व्यापक युद्ध के जोखिम को बढ़ा सकता है, लेकिन सवाल यह है कि क्या पाकिस्तान यह सोचने का साहस कर सकता है कि अब अगर कोई और युद्ध हुआ तो अमेरिका भारत को रोकने के लिए क्या करेगा, एक कदम आगे बढ़ेगा या दो कदम पीछे हटेगा?

भारत ने भी इस जंग को रोकते हुए कह दिया कि अब आगे कोई आतंकवादी हमला किया गया तो उसे भारत पर हमला माना जाएगा, लेकिन इससे यह सवाल उठता है कि क्या पहले ऐसा नहीं था। दूसरा मुद्दा यह भी कि भारत की मीडिया ने इस मामले में जिस तरह से प्रसारण किए, वो बेहद ही ओछे थे। ये करांची एयरपोर्ट को उड़ाने में व्यस्त रहे, जबकि पाकिस्तानी मीडिया प्रोपगेंडा तैयार करने में इनसे आगे निकल गई। इसका एक ही उदाहरण काफी होगा। पाकिस्तान ने दावा किया कि उसने भारत के एक विमान को गिरा कर एक महिला पायलट को बंदी बना लिया है। इसका जो सबूत सोशल मीडिया पर दिया गया, वह साफ तौर पर फर्जी था। भारत की मीडिया इस दावे को आसानी से झूठा साबित कर सकता था, लेकिन यह नहीं किया गया। इससे पाकिस्तान के लोगों को लगा कि उनकी मीडिया सच बोल रही है।

जबकि भारत की मीडिया से कहीं अधिक तो पाकिस्तान के बलूचिस्तान और पश्तून लोग ही पाकिस्तानी मीडिया की पोल खोलते नजर आए। वे जिस तरीके से पाकिस्तान की सेना और मीडिया को ट्रोल कर रहे थे, उतना शायद भारतीय मीडिया नहीं कर पाई बहरहाल, सीजफायर हो गया, अब दोनों तरफ के लोग आपस में बैठकर इसका हल निकालेंगे। अमेरिका ने एक बार फिर से साबित किया कि वह किसी का सगा नहीं है, वह सिर्फ अपने फायदे का सौदा देखता है। पाकिस्तान को एक अरब डॉलर का लोन दिलवा दिया, अब उस लोन के बदले उसे हथियार बेचेगा। भारत ने पाकिस्तान को संदेश दे दिया कि हम पाकिस्तान में बिना घुसे कहीं भी मिसाइल दाग सकते हैं। मीडिया ने बता दिया कि उसने जिस तरह की रिपोर्टिंग की, उससे दुनिया भर में उसकी विश्वसनीयता घटी है रही बात जंग के नुकसान की, तो बिना नुकसान के कोई जंग नहीं जीती जाती। अगर भारत को थोड़ा बहुत जान-माल का नुकसान हुआ, तो पाकिस्तान को इससे कई गुना अधिक नुकसान हुआ है। आज भले ही पाकिस्तान में सेना के इशारे पर कुछ कठमुल्ला पाकिस्तान की जीत का जश्न मना रहे हों, लेकिन अंदरूनी सच्चाई वे भी जानते हैं कि पाकिस्तान 1971 में दो हिस्सों में टूटकर भी जीत का जश्न मना रहा था।

-संपादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

पृष्ठ 5 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस (3 मई) ....

इन यज्ञों में सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि सभा द्वारा प्रशिक्षित महिलाओं ने पर स्वयं यज्ञों का संचालन, मंत्रपाठ किया और सबको यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया। सभा की ओर से यज्ञों का यह क्रम लगातार वर्ष भर चलता है, बड़े-बड़े यज्ञों के प्रशिक्षण शिविर भी लगाए गए हैं, जिनमें अब यज्ञ प्रशिक्षित महिलाओं की टीम घर-घर जाकर यज्ञ करा रही हैं और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रही हैं।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 12 मई, 2025 से रविवार 18 मई, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 15-16-17/05/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 मई, 2025

लो, फिर आया युवा चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविरों का मौसम

बच्चों को शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक विकास के लिए शिविरों में अवश्य भेजें

आर्य विद्यालयों के अधिकारी भी शिविरों में भाग लेने हेतु विद्यार्थियों को करें प्रेरित

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्य वीर दल
राष्ट्रीय शिविर
1 जून से 15 जून, 2025
स्थान : गुरुकुल विश्वभारती, भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)
उद्घाटन : 2 जून - सायं 5 बजे
समापन : 15 जून - सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- *सत्यवीर आर्य प्रधान संचालक, 9414789461*

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर
16 से 25 जून, 2025
स्थान : श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)
सम्पर्क करें- *सुश्री नर्मदा आर्या 8221881203*

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर
7 जून से 15 जून, 2025
स्थान : जनता इंटर कॉलेज, पलड़ी, बागपत (उत्तर प्रदेश)
सम्पर्क करें- *श्रीमती मृदुला चौहान संचालिका, 9810702760*

प्रमुख चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविरों का विवरण

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश
चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर
22 मई से 1 जून, 2025
स्थान : डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल पुष्पांजलि एन्कलेव, पीतमपुरा दिल्ली
उद्घाटन : 24 मई - सायं 5:30 बजे
समापन : 1 जून - सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- *बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164*

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश
विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर
18 मई से 25 मई, 2025
स्थान : रघुमल आर्य कन्या विद्यालय राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली
उद्घाटन : 18 मई - सायं 5 बजे
समापन : 25 मई- सायं 4:30 बजे
सम्पर्क करें- श्रीमती विभा आर्या मन्त्राणी, 9873054398

आर्य युवा संस्कार शिविर, पंचकुला
(10 से 17 वर्ष के बच्चों हेतु)
5 से 12 जून, 2025
स्थान सीमित (30 सीट)
अभिभावक स्पेशल शिविर
9-10 जून, 2025

आर्य युवती संस्कार शिविर, पंचकुला
(10 से 17 वर्ष की बालिकाओं हेतु)
11 से 17 जून, 2025
स्थान सीमित (35 सीट मात्र)
अभिभावक स्पेशल शिविर
15-16 जून, 2025

दोनों संस्कार शिविरों में भाग लेने अथवा शिविर सम्बंधी अधिक जानकारी के के लिए 7428894033 पर सम्पर्क करें। - सार्वदेशिक विश्वमार्यम ट्रस्ट

अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
42वां वैचारिक क्रान्ति शिविर
23 मई से 31 जून, 2025
आर्यसमाज रानीबाग मेन बाजार दिल्ली
उद्घाटन : 23 मई,2025 सायं 6 बजे
समापन : 31 जून, 2025 सायं 4 बजे
स्थान : डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर, जनपथ, नई दिल्ली
सम्पर्क करें- *जोगेन्द्र खट्टर महामन्त्री, 9810040982*

अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर
23 मई से 1 जून, 2025
स्थान : आर्यसमाज मेन बाजार रानी बाग, दिल्ली-110034
आवेदन की अन्तिम तिथि : 20 मई, 25
अधिक जानकारी के लिए 9311721172 से सम्पर्क करें।

बन्धुओं, वर्तमान समय अत्यन्त चुनौतियों से भरा है। अतः अपनी वास्तविक सम्पत्ति सन्तानों को शारीरिक, आत्मिक एवं बौद्धिक स्तर पर संस्कृति और संस्कारों से समुन्नत करने हेतु शिविरों का यह मौसम हर वर्ष आता है। इसलिए बिना समय गवाएं अपने बच्चों को अपने निकटवर्ती शिविरों में अवश्य भेजें। - *विनय आर्य, महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह